IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11A, 2022

महाभारतकालीन पूर्वी भारत के राज्य व नगर

शोधार्थी
संगीता
संस्कृत – विभाग
म. द. वि. रोहतक

शोध निर्देशिका
डा. सुषमा नारा
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत – विभाग
म. द. वि. रोहतक

शोध सारांश

भारत एक विशाल देश है जिसमें अनेक जनपद, राज्य तथा नगर समाहित हैं। जनपद का अर्थ है- मनुष्यों का आश्रय स्थान। प्राचीन समय में जनपद शब्द का प्रयोग उसी अर्थ में किया जाता था जैसा कि आधुनिक समय में राज्य शब्द का प्रयोग किया जाता है। पर प्राचीन समय में जनपदों का स्वरूप वर्तमान राज्यों से अलग था। वैदिक युग में अनेक छोटे-2 राज्यों की सत्ता थी जिन्हें 'राष्ट्र' नाम से भी पुकारा जाता था। इन्हें 'जनराज्य' भी कहा जाता था क्योंकि इनका मूल आधार जन होता था। इन जनपदों में शासन के लिए राजा का वरण होता था। उत्तर वैदिक युग में राज्यों व जनपदों के आपसी संघर्ष के कारण महाजनपदों का विकास आरम्भ हुआ। बौद्ध साहित्य में 16 महाजनपदों का वर्णन मिलता है साथ ही अन्य छोटे जनपदों का भी। ये जनपद राजनैतिक दृष्टि से दो प्रकार के थे एक संघ व दूसरे एकराज। नगर - 'न गच्छतीति नमः' नग इव प्रसादा : सन्यत्र। जिसमें ऊँचे-२ प्रसाद हो, तथा जिनकी दीवारें, छत्त और मकान शिलाओं से निर्मित हो, उन्हें नगर नाम से जाना जाता था। हमारे प्राचीन ग्रंथों में राजधानी शब्द का प्रयोग प्रायः राजा की प्रधान नगरी के रूप में हुआ है।

अंग जनपद – यह जनपद प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में एक था। 'महाभारत से ज्ञात होता है कि यहाँ के राजा अङ्ग के नाम के आधार पर इसका नामकरण अङ्ग, किया गया था, जो एतरेय ब्राह्मण में उल्लिखित अंग वैरोचनी से समीकृत किया जाता है। रामायण के अनुसार यहीं पर कामदेव का अंग दहन होने के कारण इसका नाम अङ्ग पड़ा'।(1) यहाँ एकराज शासन चलता था। महाभारत

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11A, 2022

आदि पर्व में कहा गया है कि जब अर्जुन राजा के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष के साथ रणभूमि में लड़ना नहीं' चाहता था तब दुर्योधन ने कहा था मैं कर्ण को इसी समय अङ्ग देश का राजा घोषित करता हूँ-

यद्ययं फाल्गुनो युद्धे नाराज्ञा योद्धुमिच्छति।

तस्मादेषोऽङ्गविषये मया राज्येऽभिषिच्यते ॥(2)

इससे पता चलता है कि महाभारत के समय कर्ण यहाँ का शक्तिशाली राजा था जिसे दुर्योधन ने यहाँ नियुक्त किया था। इस जनपद की राजधानी चंपा नगरी थी। महाभारत सभा पर्व में भी उल्लेख मिलता है कि अङ्ग देशवासी युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भेंट लेकर आए थे। अंग जनपद एक वैभवशाली जनपद था लेकिन इसका वैभव अधिक दिनों तक नहीं रह सका छठी शताब्दी ईसा पूर्व के, बिम्बिसार श्रेणिक ने इसे अपने अधीन कर लिया और यह मगध राजा के अधीन हो गया था। वर्तमान समय में यह एक पूर्ण राज्य न होकर इसका भू-भाग बिहार प्रांत में भागलपुर व मुंगेर जिले के आस-पास का प्रदेश है।

मगध- महाभारत के समय मगध भी पूर्वी भारत का एक जनपद था। जहाँ राजतंत्र शासन था। 'इस जनपद का विस्तार आधुनिक पटना तथा गया जिलों तक था और राजगृह अथवा गिरिव्रज इसकी राजधानी थी'।(3) गिरिव्रज को पांच पहाड़ियों से घिरा हुआ बतलाया गया है ऐसा प्रतीत होता था मानो सभी पर्वत इसकी सुरक्षा कर रहे हो। महाभारत के अनुसार इसकी स्थापना जरासन्ध के पिता बृहद्रथ के द्वारा की गई थी जो वसुचैद्य उपरिचर का पुत्र था। वसु ने विभिन्न राज्यों पर अपने पुत्रों को अभिषिक्त किया और बृहद्रथ को मगध का सम्राट बनाया—

नाना राज्येषु च सुतान स सम्राडभ्यषेचयत्।

महारथो मागधानां विश्रुतो यो बृहद्रथ:॥ (4)

महाभारत युद्ध की घटनाओं के साथ मगध के तीन राजाओं का सम्बन्ध था, जरासन्ध, सहदेव और सोमाधि। जरासंध एक शक्तिशाली राजा था जिसके भय से मथुरावासी मथुरा छोड़कर द्वारिका चले गए थे। श्रीकृष्ण से भी इनका वैर था क्योंकि इन्होंने जरासंध के जमाता कंस को मारा था। इसकी राजधानी समय - 2 पर बदलती रही है। अशोक के समय मगध की राजधानी पाटलीपुत्र थी। बौद्ध काल में मगध एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक और व्यापार का केंद्र रहा है। 'महाभारत में गिरिव्रज को केवल इसी नाम से नहीं अपितु राजगृह, बार्हद्रथपुरी, कुशाग्रपुर और मागधपुर भी कहा गया है'।(5)

प्राग्ज्योतिष — महाभारत के समय प्राग्ज्योतिष एक जनपद के रूप में प्रसिद्ध था। यह जनपद आसाम राज्य के गौहाटी नगर के आस-पास स्थित था। 'प्राग्ज्योतिष से तात्पर्य उस नगर से था, जो पहले ज्योतिष का केंद्र (ज्योतिषपुर) समझा जाता था। कामरूप का प्राग्ज्योतिष नाम वहाँ पर शाकद्वीपी ब्राह्मणों के आगमन के समय पड़ा। ये ब्राह्मण ज्योतिष के मर्मज्ञ थे। उन्हें आचार्य या दैवज्ञ कहा जाता था'।(6) 'कामरूप के राजा अपने वंश का उद्भव विष्णु के पुत्र नरक से मानते हैं। नरक का बेटा महाभारत का सुप्रसिद्ध वीर भगदत्त था।'(7) इस प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है कि महाभारत के समय यहाँ का राजा भगदत्त था। यहाँ कृषकों पर दण्ड यातना बहुत कम होती थी। प्राग्ज्योतिषपुर को कामरूप भी कहा जाता था।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11A, 2022

सुह्म — महाभारतकालीन यह भी एक जनपद रहा है। इस जनपद को बंग और कलिंग जनपदों के मध्य स्थित माना गया है। महाभारत ग्रन्थ में इस जनपद पर तीन बार विजय प्राप्त करने का वर्णन मिलता है। भीम, अर्जुन और राजा पाण्डु ने इसे अपनी दिग्विजय यात्रा के समय पराजित किया था। 'रघु के सामने भी यहाँ के लोगों ने आत्मसमर्पण करके अपनी रक्षा की थी।'(8) 'दशकुमारचरित के पात्र मित्रगुप्त की यात्रा के विवरण में सुह्म देश का वर्णन मिलता है उस समय तुंगधन्वा नामक राजा वहाँ का शासक था'।(9) इस प्रकार कहा जा सकता है कि अपने समय का यह एक प्रसिद्ध जनपद रहा है।

पुण्ड्र - इस जनपद का क्षेत्र उत्तरी बंगाल के बोगारा जिले में महास्थान के समीप विस्तृत था। महाभारत ग्रंथ में पुण्ड्र का नरेश वासुदेव को कहा गया है जो पुण्ड्रों, बंगो तथा किरातों का राजा बतलाया गया है जिसकी प्रसिद्धि संसार में हो रही थी-

बंग पुण्ड्र किरातेषु राजा बलसमन्वितः।

पौण्ड्रको वासुदेवेति योऽसौ लोकेऽभिविश्रुतः॥(10)

आचार व्यवहार व धार्मिक नियमों का पालन न करने के कारण पुण्ड्रों को महाभारत में वृषलत्व कहा गया है। 'राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में यहाँ के निवासी भेंट लेकर आए थे'।(11) 'आधुनिक मान्यता के अनुसार मालदा का जिला, कोसी नदी के पूर्व पूर्णिया का का कुछ अंश और दीनाजपुर का कुछ भाग तथा राजशाही का सम्मिलित भू भाग पुण्ड्र जनपद के अन्तर्गत आता था'।(12)

साकेत 'यह कोसल का एक प्रसिद्ध नगर था। साकेत और अयोध्या को प्रायः विद्वान एक ही नगर के दो नाम मानते हैं पर रिज डेविड्स महोदय ने दोनों के ऐक्य पर सन्देह प्रकट किया है। उनका कहना है कि पालिग्रन्थों में साकेत तथा अयोध्या नाम के दो विभिन्न नगरों के लिए प्रयुक्त हुए हैं। अतएव किसी भी दशा में दोनों एक दूसरे के पर्यायवाची नहीं हो सकते। उन्होंने उन्हें लन्दन तथा वेस्टमिंस्टर के समीपवर्ती नगर माना' ।(13) 'साकेत उत्तर कोशल की राजधानी था। टालमी ने इसे सौगद कहा है। पतञ्जलि के अनुसार साकेत पूर्व और पश्चिम भारत को जोड़ने वाले मुख्य मार्ग पर अवस्थित था'।(14) कहा जाता है कि साकेत में धनी सेठ निवास करते थे। एक बार इस नगर के सेठ ने अपनी पत्नी के कठोर शिरोवेदना से पीड़ित होने पर अपनी पत्नी का उपचार करने वाले जीवक नामक प्रसिद्ध वैद्य को सोलह सौ कार्षापणों की थैली भेंट में दी थी। इससे पता चलता है कि साकेत धार्मिक नगरी के साथ-2 धनिक सेठों की प्रसिद्ध वाणिज्य नगरी भी थी।

मणिपुर – मणिपुर महाभारत के समय भारत का एक प्रसिद्ध शहर था। वर्तमान समय में यह भारत का एक राज्य है इसकी राजधानी इम्फाल है। यहाँ पूर्व दिशा की तीर्थयात्रा के समय अर्जुन का आगमन हुआ था। उस समय मणिपुर के राजा धर्मज्ञ चित्रवाहन थे। उनकी पुत्री चित्रांगदा परम सुंदरी कन्या थी–

मणिपूरेश्वरं राजन् धर्मज्ञं चित्रवाहनम्।

तस्य चित्राङ्गदा नाम दुहिता चारूदर्शनम्।(15)

चित्रांगदा का विवाह अर्जुन से हुआ था। तब राजा चित्रवाहन ने विवाह के उपरान्त अर्जुन से कहा था यह मेरी पुत्री है लेकिन मेरे कोई पुत्र न होने के कारण हेतुविधि से इससे जो प्रथम पुत्र होगा वह पुत्र मेरा ही माना जाएगा। इसके गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न होगा वह

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11A, 2022

यहीं रहकर इस कुल परम्परा का प्रवर्तक होगा। इस कन्या के विवाह का यही शुल्क आपको देना होगा। इससे पता चलता है कि वर पक्ष से शुल्क लेकर कन्या का पाणिग्रहण की प्रथा वहाँ पर प्रचलित थी। विवाह के उपरांत अर्जुन तीन वर्ष तक यहाँ रहे। इसी दौरान यहाँ अर्जुन पुत्र बभ्रुवाहन का जन्म हुआ। चित्रांगदा के कोई भाई न होने के कारण बभ्रुवाहन आगे चलकर यहाँ का सम्राट बना जो अपने पिता के समान शक्तिशाली व वीर हुआ।

वाराणसी - वाराणसी भारत का एक प्रसिद्ध नगर रहा है। इसे काशी राज्य की राजधानी होने का गौरव प्राप्त था। 'पतञ्जलि ने लिखा है कि वणिक् वाराणसी के लिए जित्वरी नाम का प्रयोग करते थे। जित्वरी से तात्पर्य यह हो सकता है कि इस नगर में पहुंचने पर जय की प्राप्ति होती थी। व्यापारियों को यहाँ पर पूर्ण लाभ हुआ करता था'।(16) महाभारत में कहा गया है कि काशीराज के तीन कन्या थी अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका। ये अप्सराओं के समान सुन्दर और गुणवती थी। जब भीष्म पितामह को पता चला कि इनके पिता इनके स्वयंवर का आयोजन वाराणसी में कर रहे है तब पितामह अपनी माता सत्यवती से आज्ञा लेकर वहाँ गए और समस्त राजाओं को युद्ध में पराजित करके तीनों कन्याओं का हरण करके ले आए थे-

अथ काशिपते र्भीष्मः कन्यास्तिस्त्रोऽप्सरोपमाः।

शुश्राव सहिता राजन् वृण्वाना वै स्वयंवरम् ।।

ततः स रथिनां श्रेष्ठो रथिनैकेन शत्रुजित् ।

जगामानुमते मातुः पुरीं वाराणसीं प्रभुः।।(17)

वाराणसी में बने बनारसी कपड़े विश्व विख्यात हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह धार्मिक नगरी के साथ-2 व्यापारिक केंद्र भी थी।

'**अहिच्छत्र** - महाभारत काल में अहिच्छत्र एक प्रसिद्ध नगरी थी जो उत्तर पांचाल राज्य की राजधानी थी। अहिच्छत्र को पाञ्चालों की महानगरी कहा जाता था। पांचाल राज्य दो भागों में विभक्त था उत्तरी पांचाल और दक्षिण पांचाल। द्रोणाचार्य ने इसे अपने शिष्य अर्जुन के द्वारा द्रुपद राजा को पराजित करके प्राप्त किया था। 'अहिच्छत्र में बसने वाले पुरुष अहिच्छत्र व स्त्रियों को आहिच्छत्री कहा जाता था। हरिवंश पुराण के अनुसार अर्जुन ने इसे द्रोणाचार्य को दे दिया था। विविधतीर्थ कल्प के अनुसार इसका प्राचीन नाम सख्यावती था। एक बार पार्श्वनाथ इस नगर में भ्रमण कर रहे थे कि कमठासुर ने ईर्ष्यावश इतनी वर्षा की कि सारा नगर जलमग्न हो गया और पार्श्वनाथ भी आकण्ठ जलमग्न हो गए। तब नागराज ने रानियों सहित उन पर फनों का छत्र लगा दिया और उसके शरीर को कुण्डली से आवृत्त कर उनकी रक्षा की। तब से इस नगर का नाम अहिच्छत्र पड़ गया। अहिच्छत्र उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में स्थित रामनगर का प्राचीन नाम था'।(18) पाण्डु पुत्र भीम ने अपनी पूर्व दिग्विजय के समय इस पाञ्चालों की नगरी में जाकर उन्हें विविध उपायों से शांत करके अपने वश में किया था-

स गत्वा नर शार्दूलः पाञ्चालानां पुरं महत् ।

पाञ्चालान् विविधोपायैः सान्त्वयामास पाण्डवः।।(19)

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11A, 2022

इसे प्राचीन समय में छत्रवती भी कहा जाता रहा है।

काम्पिल्य- रामायण में इस नगर को अमरावती की तरह सुन्दर बताया गया है। यह नगर चर्मण्वती नदी के दक्षिण तट पर स्थित था। पाञ्चाल राज्य दो भागों में बटा हुआ था। उत्तरी पांचाल और दक्षिणी पाञ्चाल। उत्तरी पांचाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी जहाँ आचार्य द्रोण शासन करते थे। दक्षिणी पाञ्चाल की राजधानी काम्पिल्य थी जहाँ राजा द्रुपद राज्य करते थे। यह दाक्षिण पाञ्चाल का एक सुंदर नगर था। ऊँचे-2 भवनों से युक्त अमरावती के समान सुन्दर था। यहाँ के राजा द्रुपद बहुत शक्तिशाली थे। जब गुरू द्रोण की आज्ञा से कौरव पाञ्चाल नगर को पराजित करने के लिए गए तब राजा द्रुपद ने सबको क्षत-विक्षत कर दिया था लेकिन अर्जुन के द्वारा वे पराजित हो गए थे। 'यहाँ इसी नगर में द्रौपदी का स्वयंवर हुआ था। स्वयंवर में भाग लेने के लिए जाते हुए पाण्डव इस नगर में ठहरे थे-

ते तु दृष्ट्वा पुरं तच्च स्कन्धावारं च पाण्डवाः।

कुम्भकारस्य शालायां निवासं चक्रिरे तदा ।।(20)

वहाँ उन्होंने इस नगर की चहारदीवारों को देखकर एक कुम्हार के घर में रहने निश्चय किया था।

इति स द्रुपदो राजा स्वयंवरम घोषयत् ।

तच्छत्वा पार्थिवाः सर्वे समीयुस्तत्र भारत।। (21)

जब राजा द्रुपद ने द्रौपदी के स्वयंवर की घोषणा करवाई तब

उसे सुनकर सब राजा उनकी राजधानी काम्पिल्य में इकट्ठे होने लगे थे।

शिशुमारशिरः प्राप्यन्यविंशस्ते स्म पार्थिवाः।

प्रागुतरेण नगराद् भूमिभागे समे शुभे ।

समाजवाटः शुशभे भवनै: सर्वतो वृत:।। (22)

नगर से ईशानकोण में सुन्दर एवं समतल धरती पर स्वयंवर सभा का रंग मण्डप सजाया गया था जो सभी तरफ से सुंदर भवनों द्वारा घिरा होने के कारण शोभायमान हो रहा था। स्वयंवर की बैठक शिशुमार की आकृति में सजायी गई थी। शिशुमार के अग्र भागों में सब राजा अपने -2 मञ्चों पर बैठे थे।

सुवर्णजालसंवीतैर्मणिकुट्टिमभूषणै :।

सुखारोहण सोपानैर्महासन परि च्छेदै:।। (23)

स्वयंवर मण्ड'प भीतर से सोने के जालीदार पर्दों और झालरों से सजाया गया था। फर्श व दीवारों में मणि एवं रत्न जड़े गए थे। सरलतापूर्वक चढ़ने योग्य सीढ़ियाँ बनी थी। बड़े-2 आसन और बिछावन आदि बिछाए गए थे। स्वयंवर की शर्त थी कि जो भी धनुर्धर मछली की आँख को भेदेगा द्रौपदी उसी की धर्मपत्नी होगी। अनेक राजाओं ने प्रयत्न किया और वे सभी असफल रहे । तब अर्जुन ने इसे पूरा किया और द्रौपदी ने उसे वरमाला पहना दी। 'इसी नगर में द्रुपद के पुत्र शिखण्डी ने दशार्ण राज की कन्या से विवाह करके आगमन किया था'।(24)

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11A, 2022

'रामायण में कहा गया है कि इस नगर की स्थापना ब्रह्मदत्त नाम के राजा ने की थी लेकिन पुराणों की परम्परा के अनुसार राजा हर्ष के पांच पुत्र थे उनमें से एक का नाम काम्पिल्य था जिसने इस नगर की स्थापना की थी।'(25)

वर्तमान में यह नगर उत्तर प्रदेश के कानपुर व फर्रुखाबाद जिलों के आस-पास स्थित है। यही काम्पिल्य नामक स्थान महाभारत काल में काम्पिल्य नगर के नाम से प्रसिद्ध था। काम्पिल्य एक धनाढय और समृद्धिशाली नगर था।

उपसंहार - वैदिक युग में जन-पद के योग से बने प्राचीन जनपदों या राज्यों को राजा द्वारा संचालित किया जाता था । राज्यों व जनपदों के परस्पर झगड़े के कारण उत्तर वैदिक युग में 16 महाजनपदों का विकास हुआ। शासन के आ**धार** पर राज्यों व जनपदों को प्राय दो भागों में बांटा जा सकता है। (1) संघराज (2) एकराज । एक जनपद को दूसरे जनपद से पृथक करने वाली नदियाँ पर्वत आदि प्राकृतिक सीमाएँ होती थी। एक जनपद की सीमा दूसरा जनपद ही होता था गाँव नहीं। इसका जीता जागता उदाहरण मगध था। इसकी सीमा का निर्धारण पहाड़ियों द्वारा हुआ था। मगध, प्राग्ज्योतिष, मणिपुर, अंग, सुह्य, पुण्ड्र, साकेत, वाराणसी व अहिच्छत्र आदि महाभारतकालीन भारत के प्रमुख जनपद व नगर रहे हैं।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11A, 2022

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, विमलचरण लाहा, पृ. 72

2. महाभारत, आदि पर्व, प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ. 63. 30

3. प्राचीन भारत में जनपद राज्य, डा. सुदामा मिश्र, पृ. 42

4. महाभारत, आदि पर्व, प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ. 63.30

5. प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, डा. हेमचन्द्र राम चौधरी, पृ. 88

6.प्राचीन भारत में नगर तथा नगर जीवन, डा.उदयनारायण राय, पृ. 183

7. प्राचीन भारत, रमेशचन्द्र मजूमदार, पृ. 240

8. प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, विमलचरण लाहा, पृ. 437

9. प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, विमलचरण लाहा, पृ. 437

10. महाभारत, सभापर्व, प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ.14. 20

11. महाभारत, सभापर्व, प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ. 52.16

12. महाभारत नामानुक्रमणिका, प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ. 199

13. प्राचीन भारत में नगर तथा नगर जीवन डा.उदयनारायण राय, पृ. 113

14. पतंजलिकालीन भारत, प्रभुदयाल अग्निहोत्री, पृ. 123

15. महाभारत, आदि पर्व, प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ. 214.15

16. प्राचीन भारत के नगर तथा नगर जीवन, डा.उदयनारायण 'राय', पृ. 121-122

17. महाभारत आदि पर्व, प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ.102. 3-4

18.पतंजलिकालीन भारत, प्रभुदयाल अग्निहोत्री, पृ. 121

19.महाभारत, सभापर्व, प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ. 29.3

20 महाभारत, आदि पर्व प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ.184. 3

21.महाभारत, आदि पर्व प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ.184. 6

22.महाभारत, आदि पर्व प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ.184.16

23.महाभारत, आदि पर्व प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ.184.20

24.महाभारत, उद्योग पर्व, प० रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राय', पृ.189.13

25. विष्णुमहापुराणम्, गीता प्रेस, गोरखपुर स. 2006 पृ.4,19